गोलालारीय समाज का मुखपत्र

RNI No. MPHIN/2008/26873
No. MP/IDC/1252/2021-2023

श्री गोलालारीय दिगम्बर जैन समाज न्यास इन्दौर

golalariya.darshan@gmail.com
गोलालारीय दर्शन यहां भी देख सकते है –
www.golalariya.com
9406744064

मासिक
गोलालारीय दर्शन

सफलता के 12 वर्ष

लेट पोस्टिंग

अपनों के साथ अपनी बातें

सेवा में,

जो भरा नहीं है भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं । हृदय नहीं वह पत्थर है, जिसको समाज से प्यार नहीं ।

वर्ष : 12 अंक : 10 पृष्ठ संख्या : 20 माह – 15 अगस्त 2021 सहयोग राशी 1100/– देकर सदस्य बनें ।

चातुर्मास कलश स्थापना सानंद संपन्न...

जबलपुर, अरविंद जैन बाकल । आचार्य श्री विद्यासागर महाराजजी के जबलपुर मे मंगल प्रवेश पश्चात आज आयोजित भव्य समारोह में आचार्य श्री के चातुर्मास कलश की स्थापना सानंद पूर्ण हुई है । इस मंगल अवसर पर अनेकों श्रद्धालु बंधुओं द्वारा मंगल कलश की स्थापना के साथ साथ कमेटी द्वारा 1000 सामान्य कलशों की स्थापना करने का निर्णय लिया गया है जिन्हें धर्म सभा में उपस्थित अनेक बंधुओं ने सानंद कलश स्थापना कर पुण्य लाभ कमाया। इस अवसर पर आचार्य ने अपने मंगल प्रवचन में कहा कि, दिगम्बर मुनि 4 माह के लिए एक स्थान पर सीमित साधनों से आत्म साधना का संकल्प लेते हुए समय व्यतीत करते हैं यह संकल्प हमने ले लिया है । अब आप भी संकल्प लें इन 4 माह में आत्म साधना करें और अहिंसा संकल्प का पालन करें । सुख, शांतिपूर्वक हिंसा से दूर रहे । हमें यह दुर्लभ जीवन मिला है हम इसका पालन शत प्रतिशत अहिंसा मार्ग अपनाकर करें और बच्चों को भी अच्छे संस्कार दें। माता–पिता के संस्कारों के कारण ही बच्चे संस्कारित होते है । आज छोटे–छोटे बच्चे संकल्पित होकर आहार देने को तत्पर होते है । यह आपके ही संस्कार हैं, बच्चों के चरित्र का प्रारंभ बचपन से होता है इनका आपको ध्यान रखना है । बच्चों का लालन पालन शाकाहारी और प्रभु आराधना वाले घर में हुई है इसीलिए यह बच्चे भी संस्कारित हुए है । बच्चों को जो संस्कार दिए जाते हैं वह आगे जाकर संसार के सामने सद्गुणों के साथ प्रकट होते हैं, यह बताते है कि धर्म क्या है और संस्कार क्या होते है। जब बच्चा 8 वर्ष का होता है और आपके साथ चलने लगता है तब से ही संस्कार की नींव रखी जाती है ।

आचार्य श्री जी ने हथकरघा द्वारा निर्मित वस्तुओं का महत्व बताते हुए कहा कि गांधी जी ने कहा था कि हथकरघा जीवन मंत्र है । आज अहिंसक रूप से निर्मित वस्त्र हथकरघा से ही निर्मित हो सकते हैं । दिव्यांग बंधु हथकरघा से ऐसी कलाओं का निर्माण कर रहे हैं जिस पर कोई विश्वास नहीं कर सकता । गांव की महिलाओं, बेटी हथकरघा की विश्व स्तरीय वस्तुओं का निर्माण कर रहे हैं और आत्म सम्मान प्राप्त कर रहे हैं । आचार्य श्री ने आयुर्वेद की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आयुर्वेद 3000 से 4000 वर्ष पूर्व का ज्ञान है । यह आयुर्वेद के ग्रंथों में लिखा गया है और इसके प्रत्येक शब्द प्रत्येक लाइन पर उस समय शोध किया गया था, जो आज भी निरंतर जारी है । गत 2 वर्षों में जो महामारी आई उसमें भी आयुर्वेद की महत्ता प्रमाणित हुई है । शेष पृष्ठ क्र..2

संपादकीय...

बस, अब और नहीं ।

हाँ अब इस बात पर अमल करने का समय आ गया है । वर्तमान परिस्थिति में जहां अनेक सामाजिक व धार्मिक पत्र पत्रिकाएं आर्थिक कारणों से बंद हो रही है, तब हमें गोलालारीय समाज के एकमात्र मुख पत्र "**गोलालारीय दर्शन**" पत्रिका के निरंतर प्रकाशन और पत्रिका के आजीवन सदस्यों के हितार्थ यह कठोर निर्णय लेना पड़ रहा है । गोलालारीय दर्शन पत्रिका गत 12 वर्षों से 4386 परिवारों तक निरंतर पहुंचाई जा रही है (कोरोना काल को छोड़कर) हमारा हर संभव प्रयास रहा है कि गोलालारीय समाज की सामाजिक व धार्मिक गतिविधियों को समाज के सम्मुख रखने के दायित्व को हम पूर्ण निष्ठा के साथ पूरा करे ।

इस पत्रिका के माध्यम से हमने गोलालारीय समाज को एक सूत्र में बांधकर समग्र जैन समाज में अपने समाज का सम्मानपूर्वक प्रतिनिधित्व कर गौरवशाली स्थान पर स्थापित करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है । पत्रिका में धार्मिक और सामाजिक कार्यों की सूचनाओं को प्रमुखता से प्रकाशित किया है, सामाजिक व धार्मिक क्षेत्र में विशिष्ट योगदान देने वाले सदस्यों के साथ हमने शिक्षा के क्षेत्र में प्रतिभावान विद्यार्थियों, तप साधना करने वाले श्रावक, खेलकूद या अन्य क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाली प्रतिभाओं का सचित्र विवरण प्रकाशित कर उनका हौंसला बढ़ाकर उनकी उपलब्धियों को समाज के सम्मुख रखने की अपनी जिम्मेदारी को सहर्ष निभाया है ।

गत सात वर्षों से विवाह योग्य प्रत्याशियों की जानकारी गोलालारीय दर्शन के माध्यम से सुलभतापूर्वक उपलब्ध कराने के साथ ही **'प्रयास' संबंधों को जोड़ने का..** पुस्तिका के माध्यम से 3 राष्ट्रीय स्तर की पत्रिका का प्रकाशन भी किया है, जिससे गोलालारीय समाज के काफी परिवार लाभांवित हुए है । इस पुस्तिका से लगभग 100 से अधिक संबंध तय हुए है ।

हमारे पास दर्ज 4386 गोलालारीय परिवारों में से मात्र 47 परिवार द्वारा ही ₹ 5000 से अधिक की राशि सदस्यता के रुप में जमा हुई । ₹ 2000 से ₹ 4900 तक की राशि जमा करने वाले सदस्य 63 है इस तरह से 2000 से अधिक राशि देने वाले सदस्य 110 ही है जो गोलालारीय दर्शन पत्रिका का लाभ लेने वाले परिवारों का मात्र 4% से भी कम है । इस आंकड़े पर अब हमे विचार करना है कि क्या गोलालारीय समाज में सिर्फ 4% परिवार ही ₹ 2000 से अधिक की राशि अपनी मातृसंस्था की एकमात्र पत्रिका के लिए सहयोग देने में सक्षम है । यह आंकड़ा हम सभी को अचंभित करता है कि हम आज भी अपने उक्त 110 परिवारों को छोड़कर समाज के प्रति कुछ भी समर्पण करने का भाव नहीं बना पाये है । हम इन 110 परिवारों का हृदय से अभिनंदन करते हुए आभार मानते है जिन्होंने समाज की पत्रिका को जीवंत रखने के लिए आर्थिक सहयोग दिया । ₹ 1000 से ₹ 1900 तक मात्र 92 परिवारों से सदस्यता शुल्क प्राप्त हुआ । ₹ 25 से ₹ 1000 तक 171 लोगों ने सदस्यता शुल्क देकर पत्रिका को आर्थिक सहयोग दिया है । इस तरह सदस्यता ग्रहण करने वाले कुल 373 परिवार है, जो प्रेषित की जाने वाली गोलालारीय दर्शन पत्रिका का 9% से भी कम है । क्या हमें इन आंकड़ों पर विचार नहीं करना चाहिये ? पत्रिका की कार्यकारिणी बैठक में लिये गये निर्णयानुसार इस अंक के पश्चात गोलालारीय दर्शन पत्रिका सिर्फ उन्हीं परिवारों को भेजी जावेगी जिनके द्वारा सदस्यता शुल्क नियमानुसार जमा होगा । हमने समय समय पर पत्रिका की सदस्यता बढ़ाने का प्रयास भी किया परंतु हमारी समाज के अधिकतर परिवारों द्वारा इसको गंभीरता से नहीं लिया । जिस आशा के साथ हमने सोचा था कि समाज के अनेक सक्षम परिवार आगे बढ़कर हमें सहयोग देंगे परंतु वह आशातीत सफलता हमें नहीं मिल पाई । हम बिना आर्थिक संबल के इस पत्रिका को निरंतर प्रकाशित व संचालित करने में अब अपने को असहज महसूस कर रहे है ।

पत्रिका में प्रकाशित विवाह विज्ञापन व बायोडाटा के द्वारा जो आय होती है वह एक अंक के खर्च के अनुपात से काफी कम है । कई सक्षम परिवार मांगलिक प्रसंग के विज्ञापन देने में झिझक महसूस करते हैं जबकि उन्हें ऐसे पुनीत अवसरों को स्मरणीय बनाये रखने के लिए अपनी समाज के लिए कुछ तो समर्पण करना चाहिए । लाखों रुपये विवाह समारोह पर खर्च करने वाले परिवार विवाह समारोह की सुनहरी यादों को विज्ञापन के रुप में समाज की एकमात्र पत्रिका में प्रकाशित कर दो पांच हजार की छोटी सी सहयोग राशि देने के लिए भी मन नहीं बना पाते है । रविवार को अपने परिवार पर एक दो हजार रुपये खर्च करने वाले व धार्मिक व विवाह समारोह पर लाखों खर्च करने वाले परिवार समाज के प्रति अपने छोटे से दायित्व को क्यों भूल जाते है ? क्या समाज के प्रति उनका कोई जिम्मेदारी नहीं बनती है ? क्या हम अभी भी इसी विचारधारा से जकड़े हुए है कि समाज ने हमारे लिये क्या किया ? तो थोड़ा सा यह भी विचार करें कि बिना आपके आर्थिक सहयोग के गोलालारीय दर्शन पत्रिका ने पिछले 12 वर्षों से इसी उम्मीद से साथ जोड़े रखा है कि कभी तो

शेष पृष्ठ क्र. 2 पर...